# सरहदों के बंधन लांघते डॉक्टर

आशीष कुमार सेन

## भारत और पाकिस्तान मूल के अमेरिकी

पाकिस्तान और भारत के कुछ हिस्सों में 8 अक्टूबर, 2005 को भूकंप आने के कुछ ही दिनों के भीतर भारत और पाकिस्तान मूल के अमेरिकी डॉक्टर भूकंप के शिकार कई लोगों की शल्य चिकित्सा में जुटे थे। वे दूर-दराज के गांवों में पहुंच रहे थे और घायलों तथा बेघरों के लिए हजारों डॉलर की मदद इकठ्ठी कर रहे थे। संकट में मदद करने के बाद इनमें से कुछ अमेरिका लौटे, ताकि चिकित्सा उपकरणों के लिए मदद की अपील की जा सके और बाद की यात्राओं के लिए ज्यादा डॉक्टरों को शामिल किया जा सके।

भारतीय अमेरिकी चिकित्सक डॉक्टर इम्तियाज खान कहते हैं, ''लोगों को समझना चाहिए कि त्रासदी अभी किसी भी सूरत में खत्म नही हुई है। वह बतौर फिजिशयन के तौर पर ग्रीनविले (दक्षिण कैरोलिना) में प्रेक्टिस करते हैं। उन्हें एक पाकिस्तानी अमेरिकन चिकित्सक ने भूकंप पीड़ितों की मदद के लिए पाकिस्तान जाने वाले शुरुआती दलों का हिस्सा बनने के लिए बुलाया था। चेन्नै में पैदा हुए डॉ. खान का परिवार जब अमेरिका गया तो वह सिर्फ छह महीने के थे। इससे पहले वह पाकिस्तान सिर्फ एक बार गए थे- यह यात्रा भारत जाते समय कराची में छोटे से पड़ाव की शक्ल में थी। वह फिर पाकिस्तान जाने के लिए उत्सुक थे। डॉ. खान और उनका दल 10 अक्टूबर, को रात घिरने पर मुजफ्फराबाद पहुंचा। उस गहरे अंधेरे में देखना मुश्किल था। भूकंप ने उस क्षेत्र की बिजली-आपूर्ति को भंग कर दिया था। रोशनी का उनका एकमात्र स्रोत दूर-दराज काम कर रहे कार्यकर्ताओं के जनरेटर की चमकती रोशनी तक सीमित था।

डॉ. तारिक कहते हैं, ''सुबह उठे तो हमने उस तबाही को देखा। कुछ क्षेत्रों में तो तबाही का मंजर एकदम डरावना था।'' वह बताते हैं कि पश्चिमी डॉक्टरों के मुकाबले दक्षिण एशिया के डॉक्टरों के पक्ष में एक बात यह थी कि वे स्थानीय भाषा से परिचित थे। ''हमारे ज्यादातर लोग संवाद करने में समर्थ थे, भले उनका लहजा विलायती रहा हो। यातायात और भीड़ से हमें परेशानी नहीं होती, पर पश्चिमी लोगों के लिए ये बड़ी समस्याएं हैं।'' शिकागो में काम कर रहे डॉ. चीमा पाकिस्तानी पृष्ठभूमि वाले हड्डी विशेषज्ञ हैं। उन्होंने डॉक्टर्स वर्ल्डवाइड नामक संगठन स्थापित करने में मदद की, जो आपदा के शिकार लोगों को चिकित्सकीय सहायता देता है। उनके निमंत्रण पर ही डॉ. खान पाकिस्तान जाने वाले दल में शामिल हुए।

डॉ. सईद बाजवा कहते हैं, ''भूकंप पीड़ितों की एक टीम के रूप में मदद करने से हम भाइयों की तरह करीब आए।'' बाजवा भी अमेरिका (एंडीकॉट, न्यूयॉर्क) को अपना घर बनाने वाले पाकिस्तानी अमेरिकी न्यूरोसर्जन और अपस्टेट मेडिकल यूनिवर्सिटी बिंघमटन में न्यूरोसर्जरी के प्रोफेसर हैं।

उनकी ही तरह डॉ. फैज हुसैन कहते हैं, ''मेरे भारतीय दोस्तों ने पैसा जुटाने में मदद की। कोई सीमा नहीं थीं।'' डॉ. हुसैन जब तीन महीने के थे तो उनका परिवार हैदराबाद (भारत)से अमेरिका गया था। वह भी उस चिकित्सा दल के हिस्से थे जो 14 अक्टूबर को उत्तर पाकिस्तान के घाडी दुपट्टा इलाके में पहुंचा

साभार: डॉक्टर्स वर्ल्डवाइड

था। कस्बे के ज्यादातर लोग भूकंप में मारे जा चुके थे। लेकिन वह कहते हैं, ''स्थानीय कश्मीरियों की मेहमाननवाजी और संकट से उबरने की उनकी क्षमता दिल को छू गई।'' लॉस एंजिलीस में आंतरिक और आपात चिकित्सा के विशेषज्ञ डा. हुसैन कहते हैं, ''यह देखकर राहत पहुंची कि जातीय परिवेश, धर्म या नस्ल की परवाह किए बगैर लोग भूकंप पीड़ितों की मदद के लिए वहां थे। हमारे दल में लोग कई जातीय समूहों से थे। सबको जोड़ने वाली चीज यह थी कि सबका मकसद एक ही था।'' दल के दूसरे सदस्य जेबाराज जोशुआ इस बात से सहमत हैं। वाशिंगटन डी. सी. के जॉर्ज वाशिंगटन विश्वविद्यालय अस्पताल में कार्यरत एक पंजीकृत नर्स जोशुआ चेन्नै से 12 साल पहले अमेरिका में आए थे। वह कहते हैं, ''उनकी पत्नी एस्थर भी अस्पताल में नर्स हैं। जब जोशुआ ने उसे पहली बार बताया कि वह पाकिस्तान जाने की योजना बना रहे हैं, तो वह बहुत परेशान थी। वह हंसते हुए बताते हैं, ''उसने छह दिनों के लिए मेरा पासपोर्ट छिपा दिया। वह मेरी सुरक्षा के बारे में चिंतित थी।'' लेकिन जब उन्हें अपने पति के दृढ़ निश्चय का पता चला, तो एस्थर ने हथियार डाल दिए।

पाकिस्तान में हुए स्वागत ने जोशुआ के दिल को छू लिया। जब लोगों को यह मालूम हुआ कि मेरी पृष्ठभूमि भारत से जुड़ी है, तो वे कहने लगे कि यह हमारा भाई है। वह बताते हैं कि जब कुछ पाकिस्तानी सुरक्षा अधिकारियों ने भारतीय अमेरिकी चिकित्सकीय दल के कार्यकर्ताओं को शक की निगाह से देखा, तब पाकिस्तानी मरीज अपना इलाज करने वालों के पक्ष में खड़े हो गए। उन्होंने हमसे कहा कि हमें चिंता नहीं करनी चाहिए, वे हमें बचाएंगे। उनके अनुसार यह बहुत ही भावुक अनुभव था। जोशुआ ने ऑपरेशन थियेटर में सुबह 6 बजे से शुरू कर

# डॉक्टरों ने भूकंप पीड़ितों का दर्द बांटा

फोटो: जे. सईद बाजवा

*बिल्कुल बाएं: भारतीय मूल के अमेरिकी फिजिशयन डॉ. इम्तियाज खान एक घायल बच्चे का इलाज करते हुए।*

*बाएं: पाकिस्तानी अमेरिकी न्यूरो सर्जन डॉ. सईद बाजवा एक भूकंप पीड़ित का इलाज करते हुए।*

देर रात 2 बजे तक की लंबी पारियों में काम किया। जोशुआ और डॉ. हुसैन के दल में जॉर्ज वाशिंगटन विश्वविद्यालय अस्पताल में कार्यरत पाकिस्तानी अमेरिकी निश्चेतन विशेषज्ञ डॉ. खालिद अतहर बताते हैं कि जोशुआ के चलते मरीजों को उस स्तर का इलाज मिला जैसा अमेरिका में होता है। डॉ. अतहर कहते हैं, ''हमारे साथ उनका पाकिस्तान आना उनकी तरफ से दिखाया गया बड़ा सकारात्मक संकेत था। यह आश्चर्यजनक है कि संकट के समय लोग किस तरह से एक साथ आते हैं।'' डॉ. अतहर के दल ने घाडी दुपट्टा में एक दिन में 500 से ज्यादा मरीजों का इलाज किया। वह बताते हैं, ''यह अकल्पनीय अनुभव था। कई मरीज गहरे संक्रमित घावों के शिकार थे। कई की शल्यचिकित्सा करनी थी। पहाड़ों से उतर कर इलाज के लिए पहुंचने में कुछ दिन लगे।'' डॉ. अतहर और डॉ. हुसैन दोनों ने पाकिस्तान में एक हफ्ता बिताया और वे फिर आने को उत्सुक हैं। वर्ल्ड इकॉनोमिक फोरम ने डॉ. हुसैन के मिशन को प्रायोजित किया। वह बताते हैं कि पाकिस्तानी सैनिकों ने चिकित्सा शिविर में उनकी मदद की और सेना के हेलीकॉप्टरों ने कई बार सामान की आपूर्ति के लिए और मरीजों को लाने-ले जाने के लिए उड़ानें भरीं।

डॉ. हुसैन कहते हैं, 'मानवीय प्रयास तो बहुआयामी होते हैं। चिकित्सकीय मदद तो उसका सिर्फ एक हिस्सा है। एक बार चिकित्सा की जरुरतें पूरी हो जाएं, फिर दीर्घकालीन आवश्यकता तो लोगों को हिमालय की कड़ाके की ठंड से बचाने की है।'' डॉ. हुसैन का भूकंप पीड़ितों का हाल अपनी आंखों से देखना अमेरिका लौटकर वहां भूकंप के बारे में जानकारी का स्तर बढ़ाने में मददगार रहा। उन्होंने कई फिजिशयन से बात की जिनमें से कुछ ने बाद में पाकिस्तान की यात्रा की। वह बताते हैं, ''मैं उन्हें प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित जानकारी दे पाया। इसलिए जब वे पाकिस्तान गए तो स्थितियों से निपटने के लिए ज्यादा बेहतर तरीके से तैयार थे।''

डॉ. चीमा का किसी प्राकृतिक आपदा से पहला साक्षात्कार तुर्की में 1999 में आए हुए भूकंप के वक्त हुआ। उन्होंने 8 अक्टूबर के भूकंप के बारे में सुना, तो महसूस किया कि वह वहां जाने और मदद करने के लिए उपयुक्त व्यक्ति हैं। वह कहते हैं, ''लेकिन कोई भी चीज आपको प्राकृतिक आपदाओं का विशेषज्ञ नहीं बना सकती। कोई भी अनुभव आपको इस तबाही के लिए तैयार नहीं कर सकता।'' भूकंप के चलते इस्लामाबाद में एक अपार्टमेंट के ध्वस्त होने से डॉ. चीमा के दूर के दो रिश्तेदारों की मौत हो गई थी। वह कहते हैं, ''मेरे लिए व्यक्तिगत क्षति भी थी। आप अपने परिवार के बारे में चिंता करते हैं। लेकिन जब आप ऐसी तबाही देखते हैं, तो आप अपना दर्द भूल जाते हैं। जैसे ही तबाही का अंदाजा मिला, उन्होंने डॉ. खान से संपर्क किया और 10 अक्टूबर तक डॉक्टर्स वर्ल्डवाइड के दल पाकिस्तान में मुजफ्फराबाद, नीलम और झेलम घाटियों में काम शुरु कर चुके थे। सड़कें बुरी तरह से टूट चुकी थीं। चिकित्सकों ने बहुत बार पैदल ही यात्रा की। कुछ तो कई कस्बों तक पहुंचने के लिए सात घंटे तक पैदल चले। पहले महीने में दल ने आपातकालीन चिकित्सकीय राहत पर ध्यान केंद्रित किया। डॉ. चीमा कहते हैं, ''इतनी बड़ी आपदा के एक महीने के बाद यह स्वाभाविक है कि आपातकालीन मामलों की संख्या कम हो जाए। लोग मलबे में लंबे समय तक जीवित नहीं बचे रह सकते। अब हमारे पास ज्यादा से ज्यादा प्राथमिक देखरेख के मामले आ रहे हैं।'' जैसे ही उन्होंने भूकंप के बारे में सुना, पूर्वी स्ट्राउड्सबर्ग, पेन्सिल्वेनिया के प्लास्टिक सर्जन डॉ. हुसैन मलिक फोन पर पाकिस्तानी अमेरिकी डॉक्टरों के साथ यह रणनीति बनाने में जुट गए कि कैसे वह हजारों किलोमीटर दूर से मदद कर सकते हैं। वह कहते हैं, ''दक्षिण-पूर्व एशिया में सुनामी के बाद हमने धन जमा किया था और धर्मार्थ संस्थाओं को दान दिया। लेकिन यह आपदा उस देश में थी जहां से हम आए थे और हम उन इलाकों में सेवा करने के लिए उत्सुक थे। हमारे फिजिशयन ने तबाह इलाकों के तंबू-औषधालयों और क्षेत्र के अस्पतालों में काम किया।'' डॉ. मलिक एसोसिएशन ऑफ फिजिशियन्स ऑफ पाकिस्तान डीसेंट ऑफ नार्थ अमेरिका (एपीपीएनए या अपना) के अध्यक्ष हैं। यह एक शैक्षिक और धर्मार्थ संस्था है, जो करीब 10,000 चिकित्सकों का प्रतिनिधित्व करती है। राहत कार्यों

साभार: डॉ. सईद बाजवा

*डॉ. सईद बाजवा समेत डॉक्टरों की टीम एक भूकंप पीड़ित का ऑपरेशन करते हुए। डॉ. बाजवा का अनुमान है कि उन्होंने दो हफ्तों में कम से कम 28 ऑपरेशन किए।*

के शुरुआती चरण में अपना सदस्यों ने धन जमा किया और तंबू, स्लीपिंग बैग, कंबल, खाद्य सामग्री और पानी पाकिस्तानी संगठनों तक पहुंचाया। एक समूह जिसने राहत कार्यों के समन्वय के लिए *अपना* से संपर्क किया, वह था अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ फिजीशियन्स ऑफ इंडियन ओरिजन (एएपीआई या आपी)। इसने 5,000 डॉलर का दान दिया। भारतीय अमेरिकी चिकित्सकों को जनवरी, 2001 के गुजरात भूकंप के बाद जीवित बचे हुए लोगों के साथ काम करने का अनुभव था और उन्होंने इस अनुभव का प्रयोग सही आपदा बचाव रणनीति विकसित करने के लिए किया। सेन एंटोनियो, टेक्सास में *आपी* के अध्यक्ष विजय एन. कोली ने एक प्रतिनिधिमंडल ले जाने की योजना बनाई- पाकिस्तानी डॉक्टरों के साथ विचार-विमर्श की एक श्रृंखला के लिए और यह देखने के लिए कि उनकी जरुरत वास्तव में कहां है। *आपी* ने चिकित्सा कार्यकर्ताओं के लिए अपील की व्यवस्था तैयार की। डॉ. कोली की पत्नी मनोचिकित्सिक डॉ. मालती कोली ने दिसंबर 2004 में सुनामी के बाद नागपट्टिनम में आपदा के बाद की व्याधियों से ग्रस्त मरीजों के साथ काम किया था। वह भूकंप के बाद जीवित बचे लोगों की मदद करने के लिए उत्सुक थीं।

डॉ. चीमा पाकिस्तान में कार्य कर रहे कार्यकर्ताओं के समूह को मिलजुलकर काम करने वाले समूह की संज्ञा देते हैं। वह कहते हैं, ''सब लोगों ने साथ काम किया, चुटकुले सुने-सुनाए और भारतीय फिल्मों के बारे में बातें की। पहाड़ों के दोनों तरफ तो तबाही है, पर हमारे बीच एक सीमा है। हमने महसूस किया कि यह तबाही दरअसल लोगों को करीब लेकर आई है।'' इस क्षेत्र में काम करने वाले कार्यकर्ता बताते हैं कि कष्टों और तबाही के पैमाने ने उनके दिल पर गहरा असर छोड़ा है।

डॉ. बाजवा और उनका दल इस्लामाबाद में 17 अक्टूबर को पहुंचा और उन्होंने एबोथाबाद, बालाकोट, बाघ और मुजफ्फराबाद के बाहरी इलाकों में हेलीकॉप्टर से दौरा किया। वह अनुमान लगाते हैं कि दो हफ्तों में उन्होंने कम से कम 28 मरीजों के ऑपरेशन किए। उनका एक मरीज एक ऐसा आदमी था जो सिर के घाव से रक्त बहने के बाद कोमा में चला गया था। डॉ. बाजवा उसे हेलीकॉप्टर में इस्लामाबाद लेकर आए और उसका ऑपरेशन किया। डॉ. बाजवा बताते हैं, ''वह आदमी बच गया और अब सामान्य होने की ओर अग्रसर है।''

पाकिस्तान के दक्षिण पंजाब के रहीम यार खान में डॉ. बाजवा के रिश्तेदार हैं। वह उस 18 साल की लड़की को याद करते हैं जिसे गर्दन से नीचे के हिस्से में लकवा मार गया था। ''उसकी आंखों में झांकती बेबसी ने मेरा पीछा नहीं छोड़ा।'' उन्होंने उसका ऑपरेशन किया और दो दिनों बाद उस लड़की ने हाथ हिलाना शुरु किया। वह कहते हैं, ''इसका मूल्य विश्व में किसी भी चीज से ज्यादा था। यह उन तमाम यादों में से एक है, जो मेरे साथ रहेगी। इसने दिखाया कि औरों की जिंदगी को हम कितना ज्यादा प्रभावित कर सकते हैं।''

डॉ. मलिक बताते हैं कि पहाड़ों के ऊपरी हिस्सों में उन्हें ऐसे लोग मिले, जिनकी पुरानी चोटों का बहुत दिनों से इलाज नहीं हुआ था। मुजफ्फराबाद के पास एक गांव में दवा पहुंचाने के लिए उनके दल के सदस्य करीब 20 किलोमीटर तक पैदल चले। कई अस्पतालों के भवन भूकंप में मलबे के ढेर में तब्दील हो चुके थे। नई चिकित्सा सुविधाओं को स्थापित करने के बजाय *अपना* ने इस्लामाबाद और अन्य क्षेत्रों में मौजूद चिकित्सा सुविधाओं को बेहतर बनाने का फैसला किया। निश्चेतन यंत्र, एक्स-रे उपकरण, शल्य-चिकित्सा उपकरण और दूसरी आपदा संबंधित आपूर्ति को जुटाने को प्राथमिकता दी गई। डॉ. मलिक बताते हैं कि उनके समूह ने करीब 20 लाख डॉलर कीमत की दवाएं और उपकरण जुटाए। सहायता के प्रयासों को केंद्रीकृत बनाने और उनमें दोहराव से बचने के लिए गैर-सरकारी संगठनों और स्वयंसेवी दलों से कहा गया कि वे कस्बों और गांवों को अपना लें। अपना ने नियंत्रण रेखा से कुछ किलोमीटर की दूरी पर स्थित गांव कथई को अपनाया। डॉ. मलिक बताते हैं, ''जब हम वहां पहुंचे, तो हमने सुना कि गांव वालों ने तीन दिनों से कुछ नहीं खाया है।'' चिकित्सकों ने खाद्य सामग्री, तंबू और स्लीपिंग बैग लाने के लिए हेलीकॉप्टरों का इंतजाम किया।

डॉक्टर्स वर्ल्डवाइड मुजफ्फराबाद से करीब तीस किलोमीटर दूर कोमिकोट में एक बुनियादी स्वास्थ्य इकाई को विकसित करने के लिए पाकिस्तान के स्वास्थ्य मंत्रालय के साथ काम कर रहा है। इस समूह ने वहां के निवासियों के लिए एक एंबुलेस खरीदी है। फाइबर ग्लास का प्रीफैब्रिकेटेड अस्पताल भी तैयार किया जाएगा जहां स्थानीय चिकित्सकों को प्रशिक्षित किया जाएगा और रोजगार दिया जाएगा। चिकित्सकों का कहना है कि अंग-भंग वाले, रीढ़ की हड्डी में चोट वाले, पुनर्वास की सुविधाओं और चोटग्रस्त अंगों को ठीक करने के इलाज की व्यवस्था की सख्त जरुरत है।

*अपना* की योजना मुजफ्फराबाद, अबोथाबाद या इस्लामाबाद में 30 बिस्तरों वाला पुनर्वास अस्पताल स्थापित करने की है। डॉ. बाजवा इस संबंध में भारत में विकसित जयपुर फुट की विधि को याद करते हैं, जो पैर न रहने पर उसकी जरूरत को पूरा करने की सस्ती और टिकाऊ विधि है। वह कहते हैं, ''भारतीयों के पास क्षतिग्रस्त अंगों की जरूरत को पूरा करने की विधियां विकसित करने का उच्चस्तरीय अनुभव है। अगर वे इसमें हमारी मदद करते हैं, तो यह भगवान द्वारा भेजी मदद जैसी ही होगी। यह सर्वश्रेष्ठ मानवीय सहायता होगी।'' उन्होंने पाकिस्तान के लिए करीब 30 लाख डॉलर के रीढ़ की हड्डी की शल्यक्रिया के उपकरण जुटाए हैं। डॉक्टर्स वर्ल्डवाइड की योजना मुजफ्फराबाद में काय-चिकित्सा और पुनर्वास केंद्र स्थापित करने की भी है। मिलवाकी, विस्कोंसिन के फिजिशयन दस स्थानीय लोगों को प्रशिक्षण दे रहे हैं। डॉ. चीमा कहते हैं, ''हमारी योजना है कि हमारे प्रशिक्षुओं में कम से कम आधी महिलाएं हों, ताकि वे उन महिलाओं की मदद कर सकें जो पुरुषों के हाथों इलाज करवाने में सहज महसूस नहीं करतीं।''

जिन लोगों के साथ चिकित्सकों का लगाव हो चुका है, उन पर सर्दी की मार के प्रभावों के बारे में सोचकर वे चिंतित हो रहे हैं। जीवित बचे लगभग सारे लोगों को तंबू प्रदान किए जा चुके हैं, लेकिन ये बहुत विकट सर्दी से बचाने के लिए उपयुक्त नहीं हैं। *अपना* कथई के निवासियों को बसेरा बनाने के लिए धातु की चादरें दे रही है। डॉ. चीमा कहते हैं, ''उन्हें मिट्टी की दीवारें और धातु की छतों की जरुरत है और ज्यादा तेजी से काम करना जरुरी है।'' ☐

---

**लेखक:** *आशीष कुमार सेन वाशिंगटन में रहते हैं और वाशिंगटन टाइम्स में काम करते हैं। वह द ट्रिब्यून और आउटलुक के लिए भी लिखते हैं।*